



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम  
१५ अगस्त २०२२

दिनांक  
५. ९. २२

पृष्ठ संख्या  
।

कॉलम  
।-५

# रिसर्च • एचएयू ने विकसित की औषधीय फसल की उन्नत किस्म, 4 राज्यों के किसानों को होगा फायदा मन की अशांति व श्वास रोगों को दूर करेगा चन्द्रशूर

भारतपत्र न्यूज़ | हिसार



एचएयू में विकसित औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म एचएलएस-४ पूरे देश में खेती को अनुमोदित की है। बंदरगाह प्रक्रिया पौथा है जो मन को तो शांत करने ही साथ ही श्वास स्थिति कई रोगों को भी जड़ से पिटा देता।

विवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. टीआर शर्मा की अवक्षता वाली फसल मानक, अधिसूचना और फसल किस्म अनुमोदन केन्द्रीय उप समिति द्वारा चन्द्रशूर की इस किस्म को समर्त भारत विशेषक उत्तरी भारत के हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पंश्चमी उत्तर प्रदेश में खेती के लिए जारी किया गया है। प्रो. काम्बोज ने

भारतीय कृषि अनुसंधान पत्र को सौंपे गए पत्र के साथ बीसी प्रो. काम्बोज और शोध में अहम भूमिका निभाने वाले विशेषज्ञ।

बताया इस औषधीय बनस्पति जिसको के रूप में प्रयोग होने वाला मुख्य असारिया, आरिया, हरिलिम अदिवानी भाग इसका बीज है। गोदाय स्तर पर अचाप्लएस-४ किस्म के बीज की पैदायात 10.58 प्रतिशत जबकि उत्तरी भाग में 30.65 प्रतिशत अधिक दर्ज की गई है। इस किस्म से प्राप्त हैक्टेयर 306.71 किलोग्राम तेल प्राप्त होता है जोकि चन्द्रशूर की प्रचलित जी ए १ किस्म के लाभगम समान (306.82 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर) है।

इन वैज्ञानिकों ने विकसित की है यह किस्म चन्द्रशूर की यह किस्म हकूमि के औषधीय, संग्राह एवं क्षमतावान फसल अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. आशेस बादव, डॉ. जीएस दहिया, डॉ. ओपी यादव, डॉ. वीके मदन, डॉ. राजेश आर्य, डॉ. पवन कुमार, डॉ. इश्वरमल मुतालिया व डॉ. वंदना की मेहनत का परिणाम है। कलपति ने इन वैज्ञानिकों को बधाइ दी और औषधीय पौथा की उन्नत प्रौद्योगिकी के विकास के लिए प्रश्नास जारी रखने को कहा। विशेष कार्य अधिकारी, डॉ. अनुल हर्षगढ़ा, कृषि मानविक्यालय के अधिकारी डॉ. एसके पाहुजा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य आदि उपस्थित रहे।

### जानिए.. चन्द्रशूर के औषधीय गुण

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने इसके औषधीय गुणों के बारे में बताया कि आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में चन्द्रशूर के बीज का टूटी हड्डी को जड़ने, पाचन प्रणाली और मन का शांत करने, श्वास संबंधी रोग, सूजन, मासप्रैशियों के दृट आदि में प्रयोग किया जाता है। इनके शरीर के सही विकास के लिए इसके बीज का पाउडर बहुत लाभकारी होता है। इसके आविष्करण यह बच्चों की लंबाई बढ़ाने में भी मददगार होता है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम  
अमृतज्ञाला

दिनांक  
५. १. २२

पृष्ठ संख्या  
२

कॉलम  
३-५

## चन्द्रशूर की उन्नत किस्म से 30 फीसद पैदावार बढ़ेगी हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, पश्चिमी यूपी के लिए लाभकारी

माईं सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित की गई औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म एचएलएस-४ पूरे देश विशेषकर उत्तरी हिस्से में खेतों के लिए जारी की गई है। इस उन्नत किस्म से किसान पहले की अपेक्षा 30 फीसद ज्यादा पैदावार प्राप्त कर सकेंगे। चन्द्रशूर के बीज पाचन प्रणाली व मन को शोत करने में लाभदायक है।

कुलपति प्रो. वी.आर. काम्बोज ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान), डॉ. टीआर. शर्मा की अध्यक्षता वाली फसल मानक, औषधीय उप समिति द्वारा चन्द्रशूर की इस किस्म को समस्त भारत विशेषकर उत्तरी भारत के हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खेतों के लिए जारी किया गया है। इस औषधीय बनस्पति को असारिया, आरिया, हालिम आदि नामों से भी जाना जाता है। यह



हिसार- एचएयू में कुलपति प्रो. वी.आर. काम्बोज वैज्ञानिकों व अन्य अधिकारियों के साथ औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म एचएलएस-४ को लांच करते हुए।

### इन वैज्ञानिकों ने विकसित की है यह किस्म

चन्द्रशूर की यह किस्म हक्कीय के औषधीय, संग्राह एवं क्षमतावान फसल अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. आई.एस. यादव, डॉ. जी.एस. दहिया, डॉ. ओ.पी. यादव, डॉ. वी.के. मदन, डॉ. राजेश आर्य, डॉ. पवन कुमार, डॉ. इश्वरमल सुतालिया व डॉ. बंदना की मेहनत का परिणाम है।

फसल उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मुजरात तथा मध्य प्रदेश में व्यावसायिक स्तर पर उत्पाद जाता है। बनस्पति का औषधि के रूप में प्रयोग होने वाला मुख्य भाग इसका बीज है। राष्ट्रीय स्तर पर एचएलएस-४ किस्म के बीज की पैदावार 10.58 प्रतिशत जबकि उत्तरी भाग में 30.65 प्रतिशत औषधिक दर्जे की गई है। इस किस्म से प्रति हेक्टेयर 306.71 किलोग्राम तेल प्राप्त होता है। **चन्द्रशूर के यह हैं औषधीय गुण :**

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतसाम शर्मा ने इसके औषधीय गुणों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में चन्द्रशूर के बीज का दूटी हड्डी को जोड़ने, पाचन प्रणाली तथा मन को शोत करने, श्वास संबंधी रोगों, सूजन, मांसपेशियों के दब आदि में प्रयोग किया जाता है। बच्चों के शरीर के सही विकास के लिए इसके बीज का पाउडर बहुत लाभकारी होता है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्पादक पत्र का नाम  
**२०२१ का जागरण**

दिनांक  
**५-९-२२**

पृष्ठ संख्या  
**५**

कॉलम  
**६४**

## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विवि ने विकसित की औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म

जापरण संबोधाता, हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएस) में विकास स्तर की गई औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म एचएलएस-4 पूरे देश विशेषकर उत्तरी हिस्से में खेती के लिए अनुमोदित की गई है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डा. टीआर शर्मा की अध्यक्षता वाली फसल मानक, अधिसूचना एवं फसल किस्म अनुमोदन केन्द्रीय उप समिति द्वारा चन्द्रशूर की इस किस्म को समस्त भारत विशेषकर उत्तरी भारत के हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खेती के लिए जारी किया गया है।

आयुर्वेदिक विकित्सा पद्धति में चन्द्रशूर के बीज का टूटी हड्डी को जोड़ने, पाचन प्रणाली तथा मन को शांत करने, श्वास संबंधी रोगों, सूजन, ग्रासपेशियों के दूर आदि में प्रयोग किया जाता है। बच्चों के शरीर के सही विकास के लिए इसके बीज का पाठड़ा बहुत लाभकारी होता है। इसके अतिरिक्त यह बच्चों की लंबाई बढ़ाने में भी मददगार होता है।

### इन राज्यों को मिलेगा लाभ

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वीआर कम्बोज ने बताया कि इस औषधीय वनस्पति जिसको असारिया, आरिया, हालिम आदि नामों से भी जाना जाता है, को उत्तर प्रदेश,

• हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों को होगा उन्नत किस्म एचएलएस-4 से लाभ



विज्ञानियों व अन्य अधिकारियों के साथ कुलपति प्रो. वीआर कम्बोज। • पीआरओ

### इन विज्ञानियों ने विकसित की है यह किस्म

चन्द्रशूर की यह किस्म हक्कि के औषधीय, संग्रह एवं क्षमतावान फसल अनुभाग के विज्ञानियों डा. अश्वेश यादव, डा. जीरस दहिया, डा. ओपी यादव, डा. वीके मदान, डा. राजेश आर्य, डा. पवन कुमार, डा. झावरमल सुतालिया व डा. वंदना की मेहनत का परिणाम है। कुलपति ने इन विज्ञानियों को बधाई दी और औषधीय पौधों की उन्नत प्रौद्योगिकी के विकास के लिए प्रयास जारी रखने को कहा। इस अवसर पर विशेष शर्मा अधिकारी, डा. अतुल दीगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डा. एसके पाहुजा, मीडिया एडवाइजर डा. संदीप आर्य आदि उपस्थित रहे।

राजस्थान, गुजरात तथा मध्य प्रदेश में व्यवसायिक स्तर पर उगाया जाता है। लेकिन चन्द्रशूर की एचएलएस-4 किस्म के विकसित होने से हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर के किसान भी इसकी खेती कर सकेंगे। इस मौके पर उन्होंने बताया इस वनस्पति का औषधि के रूप में प्रयोग होने वाला मुख्य भाग इसका बीज है। राष्ट्रीय स्तर पर

एचएलएस-4 किस्म के बीज की पैदावार 10.58 प्रतिशत जबकि उत्तरी भाग में 30.65 प्रतिशत अधिक दर्ज की गई है। इस किस्म से प्राप्त हैक्टेयर 306.71 किलोग्राम तेल प्राप्त होता है जोकि चन्द्रशूर की प्रचलित जी ए 1 किस्म के लगभग समान (306.82 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर) है। इस तरह आने वाले दिनों में किसानों को इसका काफी फायदा मिलेगा।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम <u>आजीत समाचार</u>	दिनांक ५-९-२२	पृष्ठ संख्या ५	कॉलम १-३
--	------------------	-------------------	-------------

## हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने विकसित की औषधीय फसल चन्द्रशूर की ऊत किस

**हरियाणा, पंजाब, हिमाचल व अन्य के किसानों को होगा लाभ : कुलपति काम्बोज**



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वैज्ञानिकों व अन्य अधिकारियों के साथ।

हिसार, ३ मितम्बर (विरेन्द्र वर्मा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित की गई औषधीय फसल चन्द्रशूर की ऊत किस्म एचएलएस-४ परै देश विशेषकर उत्तरी हिम्मे में खेती के लिए अनुमोदित की गई है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. टी.आर. शर्मा की अध्यक्षता वाली फसल मानक, अधिसूचना एवं फसल किस्म अनुमोदन कर्त्तव्य उप समिति द्वारा चन्द्रशूर की इस किस्म को समस्त भारत विशेषकर उत्तरी भारत के

हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पंजाबी उत्तर प्रदेश में खेती के लिए जारी किया गया है। प्रो. काम्बोज ने बताया कि इस औषधीय वनस्पति विसेको असारिया, आरिया, हलिम आदि नामों से भी जाना जाता है, को उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा मध्य प्रदेश में व्यवसायिक स्तर पर उत्पाद्या जाता है। लेकिन चन्द्रशूर की एचएलएस-४ किस्म के विकसित होने से हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर के किसान भी इसकी खेती कर सकेंगे। ऊबने बताया इस वनस्पति का औषधीय के रूप में प्रयोग होने वाला मुख्य भाग इसका बोज है। राष्ट्रीय स्तर पर एचएलएस-४ किस्म

के बोज की पैदावार १०.५८ प्रतिशत जबकि उत्तरी भाग में ३०.६५ प्रतिशत अधिक दर्ज की गई है। इस किस्म से प्रति हेक्टेयर ३०६.७१ किलोग्राम तेल प्राप्त होता है जोकि चन्द्रशूर की प्रचलित जौ ए १ किस्म के लगभग समान (३०६.८२ किलोग्राम प्रति हेक्टेयर) है।

इन वैज्ञानिकों ने विकसित की है यह किस्म

चन्द्रशूर की यह किस्म हक्कि के औषधीय, सांघ एवं क्षमतावान फसल अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. आई.एस. यादव, डॉ. जी.एस. दहिया, डॉ. ओ.पी. यादव, डॉ. वी.के. मदान, डॉ. राजेश आर्य, डॉ. पवन कुमार, डॉ. शाक्तरमल सुतालिया व डॉ. बंदना की मेहनत का परिणाम है। कुलपति ने इन वैज्ञानिकों को बधाई दी और औषधीय पौधों की ऊत प्रौद्योगिकी के विकास के लिए प्रयास जारी रखने की कहा। इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी, डॉ. अनुल दीगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एस.के. पाहुजा, भीड़िया एवं बाबूजर डॉ. सर्दीप आर्य आदि उपस्थित रहे।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम पजावा मेसारी	दिनांक ५-७-२२	पृष्ठ संख्या ५	कॉलम ५-६
------------------------------------	------------------	-------------------	-------------



वैज्ञानिकों व अन्य अधिकारियों के साथ कुलपति प्रो. डी.आर. काम्बोज।

## हक्की ने विकसित की औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म

हिसार, ३ सितम्बर (ब्लू): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित की गई औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म एचएलएस-४ पूरे देश विशेषकर उत्तरी हिम्मे में खेतों के लिए अनुमोदित की गई है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डी.आर. काम्बोज ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. टी.आर. शर्मा की अध्यक्षता वाली फसल मानक, अधिसूचना एवं फसल किस्म अनुमोदन केन्द्रीय उप समिति द्वारा चन्द्रशूर की इस किस्म को समस्त भारत विशेषकर उत्तरी भारत के हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, झज्ज-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खेतों के लिए जारी किया गया है।

प्रो. काम्बोज ने बताया कि इस औषधीय बनस्पति, जिसको असारिया, आरिया, हालिम आदि नामों से भी जाना जाता है, को उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा मध्य प्रदेश में व्यावसायिक स्तर पर उगाया जाता

है। इस बनस्पति का औषधि के रूप में प्रयोग होने वाला मुख्य भाग इसका बीज है। गण्डीजी स्तर पर एच.एल.एस.-४ किस्म के बीज की पैदावार 10.58 प्रतिशत, जबकि उत्तरी भाग में 30.65 प्रतिशत अधिक दर्ज की गई है। इस किस्म से प्रति हैक्टेयर 306.71 किलोग्राम तेल प्राप्त होता है, जोकि चन्द्रशूर की प्रचलित जी-ए-१ किस्म के लगभग समान (306.82 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर) है।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने इसके औषधीय गुणों के बारे में बताया कि

आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में चन्द्रशूर के बीज का टूटी हड्डी को जोड़ने, याचन प्रणाली तथा मन का शांत करने, श्वास संबंधी रोगों, सूजन, यासपेशियों के दूर आदि में प्रयोग किया जाता है।

उन्होंने बताया कि चन्द्रशूर की यह किस्म हक्की के औषधीय, सर्वाधिक एवं क्षमतावान फसल अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. आई.एस. यादव, डॉ. जी.एस. दहिया, डॉ. ओ.पी. यादव, डॉ. वी.के. मदान, डॉ. राजेश आर्य, डॉ. पवन कुमार, डॉ. ज्ञावरमल सुतालिया व डॉ. वेदना को महनत का परिणाम है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचूर पत्र का नाम  
**टीर भूमि**

दिनांक  
**५-९-२२**

पृष्ठ संख्या  
**३**

कॉलम  
**१-४**

सफलता

**पूरे देश विशेषकर उत्तरी हिस्से में खेती के लिए अनुमोदित की किस्म**

हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, जम्मू-कश्मीर व पश्चिमी यूपी के किसानों को होगा लाभ हरिभूमि न्यूज़ // हिसार

**हक्कवि ने विकसित की औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म**



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि औषधीय वनस्पति नियोजन के अन्तर्गत इसकी उत्तरी भारत के हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खेती के लिए जारी किया गया है।

**बीज पाउडर लाभकारी**

किंद्रेश डॉ. जीतराज शर्मा ने ओषधीय गुणों के लाए में जाता कि आयुर्वेदिक विकित्सा पथ्यों ने चन्द्रशूर के लौज का दूटी छड़ी को जोड़ने पर उत्तरी तथा मध्य तथा दक्षिण भारत के लौज, माराठेश्वरी के बड़े आवृत्ति ने प्रयोग किया जाता है। वन्यों के सरीर के उठी विकास के लिए इसके बीज का पाउडर बहुत लाभकारी होता है। इसके अधिकारित यह वन्यों को लाभके बढ़ावे ने भी लाभकारी होता है।

**इन वैज्ञानिकों ने विकसित की किस्म**

चन्द्रशूर की यह किस्म हक्कवि के औषधीय, सरगथ पर व्यापारिक फसल अनुमोदन के वैज्ञानिकों डॉ. आद्वे प्रस. यादव, डॉ. जी.प्रस. दहिया डॉ. ओ.पी. यादव, डॉ. वी.के. मदन, डॉ. राजेश जारी, डॉ. पवन कुमार, डॉ. क्षमारमण चुतालिया व डॉ. दंदना की महत्व का परिणाम है। कुलपति ने इन वैज्ञानिकों को बधाई दी और औषधीय पौधों की उच्चता प्रौद्योगिकी के विकास के लिए प्रयास जारी रखने को कहा। इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी, डॉ. अतुल दोगड़ा, अधिकारी डॉ. एस.के. पाठुजा, मीडिया प्रबलाहजर डॉ. उमीप आर्य आदि उपस्थित रहे।



## चौधारी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

दस्तावेज़ पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
मुनिकुल जागरण	५ - ९.२२	५	१-५

# हरियाणा में चारे का प्रबंधन करेगा नया फोडर प्लान, चारे के लिए होगा बैंक

विनय टर्नरा • हिसार

हरियाणा के पास जल्द ही अपने पशुओं के लिए चारे का एक विशेष प्लान होगा। जिसे फोडर प्लान कहा जाएगा। इसके लिए हरियाणा के कुछ संस्थाओं को राय के साथ मास्टर प्लान तैयार हो गया है। एक से दो माह तक फोडर प्लान को लागू भी करेगा जाएगा। इसके साथ ही आगामी समय में चारे की किल्लत न हो इसके लिए चारा बैंक भी सरकार शुरू कर सकती है।

फोडर प्लान को उत्तर प्रदेश के झांसी स्थित भारतीय चारागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान द्वारा तैयार किया जा रहा है। इस प्लान को बनाने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के भारतीय चारागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान में श्रेज्ञेन्ट कोरेंटिनर और प्रिसिपल साइटिस्ट डा. अजोय गोय ने बताया कि चौधारी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग, राजकीय कृषि विभाग और

झांसी स्थित भारतीय चारागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान तैयार कर रहा फोडर प्लान

प्लानिंग विभाग सहित कुछ अन्य संस्थानों से गण्युमारी कर ली है। यहाँ तक कि उन्हें मास्टर प्लान भी दिखा दिया है।

अब भारतीय चारागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान के विज्ञानी हरियाणा के हिसाब से चारा प्रबंधन के लिए प्लान तैयार कर रहे हैं। हरियाणा को दो अलग श्रेणियों में बांटा गया है उसी आधार पर दो प्लान तैयार होंगे।

इसमें चारे की किसी, उनको लगाने का तरीका, वैज्ञानिक प्रबंधन, चारा देने का समय, बचे चारे का रखरखाव आदि पूरी जानकारी होगी। जिससे चारा बबाद भी नहीं होगा और पशुओं को भी पश्चात पोषण मिलेगा। वहीं चारा बैंक अगर सूखा और बाढ़ जैसी परिस्थिति के लिए होगा। यहाँ विज्ञानिक तरीके से चारे की फसल का प्रबंधन किया जा सकेगा।



### देश में इतनी है चारे की कमी

पर्तमान समय में देश में करीब 11 प्रतिशत दरे चारे और करीब 23 प्रतिशत सुखे चारे के साथ-साथ लगातार 29 प्रतिशत दाने की कमी है। पशुधन की जनसंख्या में 1.23 प्रतिशत की दर से हो रही वृद्धि के चलते मांग और आपूर्ति के बीच यह अंतर आने वाले समय में और बढ़ सकता है जिसके लिए जल्दी कदम उठाना बहुत आवश्यक है। एवश्यू के चारा अनुभाग के विज्ञानी डा. योगेश जिंदल ने बताया कि एक किसी को तैयार करने में 14 वर्ष का समय लगता है। हाल ही में एवश्यू द्वारा तैयार चारे की कई किसमें विभिन्न राज्यों में किसानों के लिए काफ़ी मददगार बनी हुई है।

आगले साल तक हरे चारे की दो किस्में हो सकती हैं जारी, शोध कार्य पूरा

चारे की कमी से जुड़ी समस्या को देखते हुए चौधारी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एवश्यू) के विज्ञानी अधीक्षी से ही वैद्यारियों में जुट गए हैं। वह ऐसी चारा की किसी पर कार्रव कर रहे हैं जिसमें अधिक पैदावार हो, तापमान को छोल सके और अच्छी गुणवत्ता का बीज तैयार हो सके। इसके लिए अगले साल तक एवश्यू हरे चारे में दो नई किस्में (एवजे 1513 और एवजे एच 1514) ला सकता है। यह किस्में अधिक हरा चारा उत्तेजक कराने का काम करेंगी। मौजूदा समय में 550 विवरण चारा प्रति हेक्टेयर देने वाली फसलें हैं। विज्ञानी इस पैदावार को और बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। इसके साथ ही एवजे 1513 और एवजे एच 1514 किस्म में वीमारियों से लड़ने की क्षमता भी होगी। यह हरियाणा के लिए तो उपयुक्त होगी मगर आने वाले समय में स्पष्ट ही जाएगा कि देश के किस-किस राज्यों में उसकी पैदावार ली जा सकती है।

पर्तमान में चारे की कमी को देखते हुए इस विषय पर गमीरता से कार्य करने की आवश्यकता है। इसको लेकर एवश्यू कुछ नई किस्में जल्द लाएगा। जो वीमारियों से लड़ने में, अधिक पैदावार देने में सक्षम होंगी। इसके साथ ही किसान भी अच्छी किसी के चारा बीजों का प्रयोग करें।

-श्री वीआर कांबोज, कुलपति, एवश्यू हिसार





# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम <u>अभ्यास उच्चाला</u>	दिनांक ५. ९. २२	पृष्ठ संख्या ३	कॉलम ७-४
---	--------------------	-------------------	-------------



## कृषि विशेषज्ञ की सलाह

कलापति प्रो. वीआर कांडोज

### कपास में इस माह में कमी न आने दें

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। कपास में इस माह में कमी न आने दें। खाद के रूप में 2.5 प्रतिशत यूरिया व 1.5 प्रतिशत जिक सलफेट का घोल बनाकर सूखे करें। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वीआर कांडोज के अनुसार इसके बाद 10 दिन के अंतराल पर दो बार पोटाशियम नाइट्रोट 1 प्रतिशत की दर से सूखे करें। एक तिहाई टिंडे तैयार होने के बाद कपास में सिचाई न करें।

टिंडा गलन की रोकथाम के लिए कौपर औंकसीक्सीराइड 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़के। टिंडा की सूँडियों की रोकथाम के लिए आवश्यकता हो तो एक छिड़काव सिफारिश की गई कौटनाशक का अवश्य करें। मीलीबग के नियंत्रण के

लिए परपोथी पोधों को नष्ट करे व सिर्फिरिश की गई कौटनाशकों का छिड़काव करें। उधर, चने की फसल के लिए बीज का अभी से प्रबंध कर लें। किसी विश्वस्त बीज संस्था में संपर्क करें।

बारानी क्षेत्रों में चने की बिजाई के लिए वर्षा के पानी को एकत्रित करने के लिए इस माह आवश्यकतानुसार खेत की जुताई करें ताकि खरपतवार निकल जाए। हर बार सुहागा लगाएं ताकि नमी बनी रहे। चने की बुवाई के लिए ट्रैक्टर चालित गोजर सीडर का प्रयोग करें। यह यंत्र बारानी और सिंचित दोनों क्षेत्रों में चने की बुवाई के लिए उपयुक्त है। बुवाई वंत्रों का ठोक से समाशोजन करके रख लें ताकि बुवाई के लिए समय कोई कठिनाई न आए।

**सवाल भेजें** — (व्हाट्सएप नंबर) 7027781155

### मौसम का पूर्वानुमान

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार प्रदेश में 5 व 6 सितंबर और 10 व 11 सितंबर को बौद्ध-बौद्ध में बादलबाई व रही कही हवाओं के साथ बंदाबाई या हल्की बारिश की संभावना है।

### हेल्प लाइन

अगर आप कृषि से संबंधित कोई जानकारी देना या लेना चाहते हैं तो इस आईडी पर मेल करें और सज्जेवर में agro भवरय लिखें।

**hsr-dakincharge@hsramarujaia.com**



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग २१५८	03.09.2022	--	--

## हक्कि ने विकसित की औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म

कुलपति प्रो. बी.आर.  
काम्बोज बोले,  
हरियाणा, पंजाब,  
हिमाचल प्रदेश, जन्म-  
कठमीर और पश्चिमी  
उत्तर प्रदेश के किसानों  
को होगा लाभ



जम्मू-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खेती के लिए जारी किया गया है।

चिराग टाइम्स न्यूज  
हिसार। चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित की गई औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म एचएलएस-4 पूरे देश विशेषकर उत्तरी हिस्से में खेती के लिए अनुमोदित की गई है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. टी.आर. शर्मा की अध्यक्षता वाली फसल मानक, अधिमूलन एवं फसल किस्म अनुमोदन केन्द्रीय उप समिति द्वारा चन्द्रशूर की इस किस्म को समस्त भारत विशेषकर उत्तरी भारत के हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश,

प्रो. काम्बोज ने बताया कि इस औषधीय वनस्पति जिसको असरिया, आरिया, हालिम आदि नामों से भी जाना जाता है, को उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा मध्य प्रदेश में व्यवसायिक स्तर पर उगाया जाता है। लेकिन चन्द्रशूर की एचएलएस-4 किस्म के विकसित होने से हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर के किसान भी इसकी खेती कर सकेंगे। उन्होंने बताया इस वनस्पति का औषधीय के रूप में प्रयोग होने वाला मुख्य भाग इसका बीज है। राष्ट्रीय स्तर पर एचएलएस-4 किस्म के बीज की पैदावार 10.58 प्रतिशत जबकि उत्तरी भाग में 30.65 प्रतिशत अधिक दर्ज की गई है। इस किस्म से प्रति हैक्टेयर

### इन वैज्ञानिकों ने विकसित की है यह किस्म

चन्द्रशूर की यह किस्म हक्कि के औषधीय, संगंध एवं अमतावान फसल अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. आई.एस. यादव, डॉ. जी.एस. दहिया, डॉ. ओ.पी. यादव, डॉ. वी.के. मदान, डॉ. राजेश आर्य, डॉ. चवन कुमार, डॉ. झावरमल सुतालिया व डॉ. बंदना की महत्व का परिणाम है। कुलपति ने इन वैज्ञानिकों को बधाई दी और औषधीय पौधों की उन्नत प्रोड्यूसिंग की विकास के लिए प्रयास जारी रखने को कहा। इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी, डॉ. अतुल दीर्घाड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य आदि उपस्थित रहे।

306.71 किलोग्राम तेल प्राप्त होता है पद्धति में चन्द्रशूर के बीज का टूटी हड्डी जोकि चन्द्रशूर की प्रचलित जी.ए.1 को जोड़ने, पाचन प्रणाली तथा मन को किस्म के लगभग समान (306.82 शांत करने, श्वास संबंधी रोगों, सूजन, किलोग्राम प्रति हैक्टेयर) है।

माँसपेशियों के दर्द आदि में प्रयोग चन्द्रशूर के यह हैं औषधीय गुण किया जाता है। बच्चों के शरीर के सही हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विकास के लिए इसके बीज का अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा पाऊंडर बहुत लाभकारी होता है। इसके ने इसके औषधीय गुणों के बारे में अतिरिक्त यह बच्चों की लंबाई बढ़ने



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सभस्त्रृत दृष्टिया	03.09.2022	--	--

# चौ.च.सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने विकसित की औषधीय फसल चन्द्रशुर की उन्नत किस्म अनुमोदित

हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों को होगा साधारण : कूलपति प्रो. डॉ. आर. काम्पोज

समस्त हरियाणा चूज

दिसार : चौथी चारण चिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित की गई औषधीय फसल चन्द्रशुर को जल्द किस्म एचएलएस-4 पूरे देश विशेषकर उत्तरी हिस्से में खेतों के लिए अनुमोदित की गई है। विश्वविद्यालय के कूलपति प्रो. डॉ. उमा काम्पोज ने यह जानकारी देते हुए आशय कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप योगानिदेशक (फारमल विज्ञान) डॉ. टी.आर. शर्मा की अध्यक्षता कर्त्ता कर्मसूल चालक अधिकृत एवं हेने काना भुज्य भाग इसका बोर्ड है। जाता है। खम्बों के गोरी के महीन किसाम

एकल किस्म अनुमोदित केन्द्रीय दफ़ा गोरी सदर-पर एचएलएस-4 किस्म के समिति द्वारा चन्द्रशुर की इस किस्म की गोरी भाग 10.58 प्रतिशत जपानी समस्त भारत विशेषकर उत्तरी भारत के उत्तरी भाग में 30.65 प्रतिशत अधिक दर्जे हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और जम्मू कश्मीर उत्तर प्रदेश में खेतों की गयी है। इस किस्म से प्रति हेक्टेक्यो काम्पोज और खम्बों उत्तर प्रदेश में खेतों 306.71 किलोग्राम तेज़ गता जाता है के लिए जारी किया गया है। प्रो. काम्पोज ने चारण कि इस औषधीय बनायी के लकड़म लकड़म (306.82 किलोग्राम विकारी अमालिय, भारतीय, तालिम अवधि प्रति हेक्टेक्यो) है। चन्द्रशुर के यह है जाने से भी जाना जाता है, को उत्तर प्रदेश, औषधीय गुण हरियाणा कृषि गोवर्धन, गुजरात तथा संघ प्रदेश में विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. अवधार पर उत्तरा जाता है। जीवराम शर्मा ने इसके औषधीय गुणों के लिए चन्द्रशुर की एचएलएस-4 किस्म को में यताया कि आनुमोदित विकसित के विकसित होने में हरियाणा, पंजाब, पंजाब में चन्द्रशुर के खींच का दटी हड्डी की विमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर के किसान खोल्ने, पाचन प्रक्रिया तथा सब की जाति भी इसको खेतों कर सकें। उठाने वाला करने, धान सर्वेशी रोगों, सूखन, इस बनायी का अधिकों के रूप में प्रयोग गोपनीयों के दर्द अवधि में प्रयोग किया जाता है। खम्बों के गोरी के महीन किसाम



के लिए इसके बोर्ड का पाइलर बहु यात्रा, डॉ. शी.के. मदन, डॉ. रमेश अधि. लाभकरी होता है। इसके अधिकारी यह डॉ. परवन कुमार, डॉ. ज्ञानपाल सुलभिया वन्हों की लकड़ी भट्टों में भी महानार न डॉ. खेता की योग्यता का परिचय है। होता है। इन वैज्ञानिकों ने विकसित को है इस अवधार पर विशेष जारी अधिकारी, यह किस्म चन्द्रशुर की यह किस्म हरियाणा डॉ. अमूल दीपदा, कृषि महाविद्यालय के औषधीय, सांग्रह एवं भूगोलवाद विभाग डॉ. एस.के. शहज़ाद, भौदिला अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. आई.एम. एक्साइजर डॉ. संदीप अध्यात्म अवधि उपस्थित चरण, डॉ. जी.एम. तीरथ, डॉ. ओ.पी. रहे।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नं. ८०२	03.09.2022	--	--

## हकूमि वैज्ञानिकों ने औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म विकसित की



नम-छोट न्यूज ॥ 03 अक्टूबर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विकसित की गई औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म एचएलएस-4 पूरे देश विशेषकर उत्तरी हिस्से में खेती के लिए अनुमोदित की गई है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रौ. बीआर काम्पोज ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. टीआर शर्मा की अव्यक्ता वाली फसल मानक, अधिसूचना एवं फसल किस्म अनुमोदन के द्वाये उप समिति द्वारा चन्द्रशूर की इस किस्म को समर्पित भारत विशेषकर उत्तरी भारत के हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खेती के लिए जारी किया गया है। उन्होंने बताया कि इस औषधीय बनस्थिति, जिसको असारिया, आरिया, हालिम आदि नामों से भी जाना जाता है, को उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा मध्य प्रदेश में व्यक्तिगतिक स्तर पर

### चन्द्रशूर के यह हैं औषधीय गुण

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने इसके औषधीय गुणों के बारे में बताया कि अयुर्वेदिक विकितस पद्धति में चन्द्रशूर के बीज का दूटी हड्डी को जोड़के, पावन प्रणाली तथा मन को शांत करने, श्वास संबंधी रोगों, सूजन, मासापेशियों के दर्द आदि जै प्रयोग किया जाता है। वयों के शरीर के सही विकास के लिए इसके बीज का पाऊहर बटुत लाभकारी होता है। इसके अतिरिक्त यह घच्छों की लबाई बढ़ाने में भी महत्वात होता है।

### इन वैज्ञानिकों ने विकसित की यह किस्म

उगाया जाता है लेकिन चन्द्रशूर की एचएलएस-4 किस्म के विकासित होने से हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर के किसान भी इसकी खेती कर सकेंगे। उन्होंने बताया इस बनस्थिति का औषधीय के रूप में प्रयोग होने वाला मुख्य भाग इसका बीज है। राष्ट्रीय स्तर पर

चन्द्रशूर की यह किस्म हकूमि के औषधीय, संजैव एवं समतावाल फसल अनुमोदन के वैज्ञानिकों डॉ. आर्हारा यादव, डॉ. जीएस दहिया, डॉ. ओपी यादव, डॉ. वीके मदाल, डॉ. राजेश आर्य, डॉ. पवन कुमार, डॉ. झावठमल सुतालिया व डॉ. वंदेला की मेहनत का परिणाम है।

एचएलएस-4 किस्म के बीज की पैदावार 10.58 प्रतिशत जबकि उत्तरी भाग में 30.65 प्रतिशत अधिक दर्ज की गई है। इस किस्म से प्रति हैक्टेकर 306.71 किलोग्राम तेल प्राप्त होता है जोकि चन्द्रशूर की प्रचलित जीए 1 किस्म के लगभग समान (306.82 किलोग्राम प्रति हैक्टेकर) है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सूचीकार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सूचीकार पत्र	03.09.2022	--	--

एचएयू ने विकसित की औषधीय फसल चन्द्रशूर की उन्नत किस्म

हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों को होगा लाभ : प्रो. काम्बोज

प्रियों का व्यवहार, जिकरा करने वाले  
जैसे ही देखते हैं कि विविधताएँ वे  
विविधताएँ नहीं हैं जो ऐसी व्यवहार करते हैं  
कि उनका विविध व्यवहार तथा विविध  
विविधताएँ जाती रहती हैं भौतिक व विद्या  
विविधताएँ भी नहीं हैं।

१२. वायरोज ने बहुत किए हुए और दूसरी बहुत किए हुए अवधि, अद्वितीय



सुनायी थीं, कि जब वास्तविक स्थिति न बन जाएगी तो उसके

लक्षण एवं लक्ष्य से भी जड़ जड़ दें  
जो उत्तर प्रदेश, हावड़ा राज्य, बुखारा राज्य  
यहाँ दूसरे ने अवश्यकित कर ला लक्ष्य  
जड़ है। लक्ष्यन विद्युत वी विद्युत-

人与自然的和谐发展。36

एकांकी विद्यालय एवं निष्ठा-समिति का शिक्षण

विवरण भी दूसरी गोली पर रखें। उन्हें लोग

456 501 司法部 附录 附录 附录

इन लैनियरों से विस्तृत रूपी है या विस्तृत

every all or those apply to should, none or otherwise others suggest to  
be treated as. All other cases, if others, they, it, all, none, it, it, it, none, it  
other and, if none, none, it, however, applies to it, none or others or  
others, it, applies to it, however, it, none, it, it, should, it, it, none,  
should, it, however, it, the case with regard to others, it, should, it, it, none, and  
whatever, it, says, others, and, whenever, it, applies to others, it, none, others  
otherwise, it, applies, and, whenever, it,

वो एह है उस नियम से जीते रखेंगे 306.71 लिंगायत तो वह तोहंगे जीते रखाएंगे वो प्रबलता हो ए १ लिंग में लगाए गए १३६.८२ लिंगायत जीते रखेंगे।

कल्पना के पार है लोकगीत गुण  
हिंदूगीत वर्षा विश्वविद्यालय के  
अध्यात्मक निदेशक जी, जीवनमय कार्यों में  
इसके अधीक्षण भूमि के लिए से बहाया है।